भारत सरकार
विदेश मंत्रालय
लोक सभा
अतारांकित प्रश्न संख्या – 1270
दिनांक 06.02.2026 को उत्तर दिए जाने के लिए

भारत की बौद्घ कूटनीति

1250. श्री जगदम्बिका पाल

क्या **विदेश मंत्री** यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) हाल ही में हुई 'बोधि यात्रा' और संबंधित पहलों ने दक्षिण-पूर्व एशिया में भारत की बौद्घ कूटनीति को किस प्रकार आगे बढ़ाया है और आसियान दशों के साथ सांस्कृतिक और आध्यात्मिक संबंधों को किस प्रकार मजबूत किया है;
(ख) आसियान सांस्कृतिक विरासत परियोजनाओं और पर्यटन सहयोग के लिए समर्थन सहित सांस्कृतिक कूटनीति के माध्यम से आसियान राष्ट्रों के साथ संबंधों को बनाए रखने और बढाने के लिए सरकार द्वारा तैयार की जा रही विशिष्ट दीर्घकालिक रणनीतियों का ब्यौरा क्या है;
(ग) क्या मंत्रालय अंतर्राष्ट्रीय मानकों को पूरा करने और पर्यटन और द्विपक्षीय आदान-प्रदान को बढ़ाने के लिए बौद्घ परिपथ के साथ-साथ अवसंरचना का विकास करने और कनेक्टिविटी को बढ़ावा देने के लिए राज्य सरकारों, पर्यटन मंत्रालय और अन्य हितधारकों के साथ सहयोग कर रहा है और यदि हाँ, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है; और
(घ) क्या सरकार सिद्धार्थनगर जिले में पिपराहवा और कपिलवस्तु जैसे विरासत स्थलों और विदेशों में बौद्घ विरासत स्थलों के बीच सांस्कृतिक संबंधों को बढ़ावा दे रही है और यदि हाँ, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है?

उत्तर
विदेश राज्य मंत्री
(श्री पबित्र मार्गेरिटा)

(क से घ) भारत सरकार की एक्ट ईस्ट नीति का उद्देश्य दक्षिण पूर्व एशिया के देशों सहित अन्य देशों के साथ आर्थिक सहयोग को बढ़ावा देना, सांस्कृतिक संबंधों को मजबूत करना और रणनीतिक संबंध विकसित करना है। साझा बौद्ध विरासत कई आसियान देशों के साथ द्विपक्षीय, क्षेत्रीय और बहुपक्षीय स्तर पर हमारे संबंधों का एक महत्वपूर्ण पहलू है। बौद्ध भिक्षुओं, वरिष्ठ पदाधिकारियों, तीर्थयात्रियों और पर्यटकों के नियमित आदान-प्रदान से सांस्कृतिक और आध्यात्मिक संबंध मजबूत होते हैं।

पिछले दो वर्षों में, साझेदार देशों के अनुरोध पर, भारत सरकार ने दक्षिण पूर्व एशिया में भगवान बुद्ध के पवित्र अवशेषों की दो महत्वपूर्ण प्रदर्शनियों का आयोजन किया है। पहली प्रदर्शनी, 22 फरवरी से 19 मार्च 2024 तक थाईलैंड में चार स्थानों पर आयोजित की गई थी, जिसमें बुद्ध और उनके शिष्यों के अवशेष शामिल थे, इसमें चार स्थानों पर व्यापक जनभागीदारी देखी गई, जिसमें 40 लाख से अधिक श्रद्धालु उपस्थित थे। दूसरी प्रदर्शनी 2 मई से 2 जून 2025 तक वियतनाम में आयोजित की गई थी, जहां संयुक्त राष्ट्र वेसाक उत्सव के दौरान आंध्र प्रदेश के नागार्जुनकोंडा से प्राप्त अवशेषों को नौ स्थानों पर प्रदर्शित किया गया थी, जिसमें अनुमानित 1.4 करोड़ दर्शक आए थे। इन पहलों ने संबंधित देशों के साथ सांस्कृतिक संबंधों को मजबूत करने में योगदान दिया।

मेकांग गंगा सहयोग (एमजीसी) कार्य योजना (2019-24) के तहत, विदेश मंत्रालय (एमईए) ने उत्तर प्रदेश सरकार और बिहार सरकार के समन्वय से नामांकन के आधार पर 49 प्रतिभागियों (कंबोडिया, लाओ

पीडीआर, थाईलैंड, म्यांमार और वियतनाम से) के लिए 2-10 जून 2025 तक ट्रैवल एजेंसियों की 9 दिवसीय यात्रा का आयोजन किया, जिसमें प्रमुख बौद्ध स्थलों का भ्रमण कराया गया।

भारत सरकार ने बौद्ध विरासत पर क्षमता निर्माण में भी योगदान दिया है, जिसमें नालंदा विश्वविद्यालय सहित विभिन्न विश्वविद्यालयों और संस्थानों में अनुसंधान, अकादमिक डिग्री पाठ्यक्रम और अल्पकालिक प्रशिक्षण के लिए समर्थन शामिल है।

वर्ष 2025 को आसियान-भारत पर्यटन वर्ष के रूप में नामित किया गया था, और पर्यटन सहयोग को मजबूत करने के लिए कई गतिविधियां आयोजित की गई हैं। सहयोग और दृश्यता बढ़ाने के लिए प्रमुख पहलों में मलेशिया, थाईलैंड, वियतनाम, गुवाहाटी और बेंगलुरु में आयोजित आसियान-भारत पर्यटन पेशेवर विनिमय कार्यक्रम शामिल है। इसके अतिरिक्त , विचारों के आदान-प्रदान और पर्यटन सहयोग को बढ़ावा देने के लिए आसियान-भारत पर्यटन मंत्रियों की बैठक वार्षिक आधार पर आयोजित की जाती है। भारत, आसियान सांस्कृतिक विरासत सूची के विकास के लिए व्यवहार्यता अध्ययन करने में आसियान का समर्थन कर रहा है।

विदेश मंत्रालय भारत में विदेशी सरकारों के दूतावासों के सहयोग से विभिन्न राज्यों में बौद्ध सर्किट और बौद्ध धरोहर स्थलों सहित पर्यटन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से कार्यक्रमों/सम्मेलनों का आयोजन करता रहा है। विदेश मंत्रालय विदेश स्थित अपने मिशनों / केंद्रों के माध्यम से भी गतिविधियों का समर्थन करता है, जिनमें पर्यटन को बढ़ावा देने की पहलों के तहत बौद्ध सर्किट का प्रचार करना शामिल है। भारतीय मिशन संबंधित देशों में विभिन्न पर्यटन उद्योग व्यापार मेलों में राज्य सरकारों की भागीदारी को भी सुगम बनाते रहे हैं।

दूसरा अंतर्राष्ट्रीय बौद्ध परिसंघ (आईबीसी) द्वारा संस्कृति मंत्रालय के सहयोग से 24-25 जनवरी 2026 को नई दिल्ली में आयोजित वैश्विक बौद्ध शिखर सम्मेलन में दुनिया भर से लगभग 200 अंतर्राष्ट्रीय प्रतिनिधियों ने भाग लिया, जिनमें प्रमुख बौद्ध संगठनों के नेता, प्रख्यात भिक्षु, विद्वान और धम्म के अनुयायी शामिल थे।

दिनांक 8 से 25 नवंबर 2025 तक, भारत से लाए गए भगवान बुद्ध के पवित्र पिपराहवा अवशेषों की प्रदर्शनी भूटान में लगाई गई थी। भूटान के शाही परिवार, सरकार और जनता ने इन पवित्र अवशेषों का अत्यंत श्रद्धापूर्वक स्वागत किया। लगभग 108,000 लोगों (भूटान की जनसंख्या का 14%) ने इन पवित्र अवशेषों के दर्शन किए।

3 जनवरी 2026 को, माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने नई दिल्ली के राय पिथोरा सांस्कृतिक परिसर में 'प्रकाश और कमल: प्रबुद्ध व्यक्ति के अवशेष' नामक ऐतिहासिक प्रदर्शनी का उद्घाटन किया, जिसमें हाल ही में भारत में प्रत्यावर्तित पवित्र पिपराहवा अवशेषों को प्रदर्शित किया गया। यह ऐतिहासिक घटना भगवान बुद्ध के पिपराहवा रत्न अवशेषों के 127 वर्षों के बाद प्रत्यावर्तित होने का प्रतीक है।

*****